Wednesday
16.05.19

— पाठ - 2 —

— असली याचक —

शब्दार्थ →

नम्रता – कोमलता
सहसा – अच्छे हृदयवाला / दयालु
सहृदय – अचानक
राह – रास्ता
प्रयत्न – कोशिश
संलग्न – लगे रहना
ताँता बँधा रहना – भीड़ होना
धरोहर – अमानत, विरासत
राहगीर – रास्ते पर चलनेवाले लोग
आशीष – आशीर्वाद
फिटन – चार पहियों की खुली घोड़ागाड़ी
याचना – प्रार्थना
विकल – दुखी, बेचैन, व्याकुल
शाप – बद्दुआ
संपूर्ण – समस्त, पूरा का पूरा

लघु उत्तरीय प्रश्न →

प्रश्न-1- अंधी जो कुछ माँगकर लाती थी, उसे कहाँ रखती थी ?
अंधी जो कुछ माँगकर लाती थी, उसे अपनी झोंपड़ी में स्थित एक हाँडी में गाड़ कर रखती थी।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

प्रश्न-2- सेठ बनारसीदास की कोठी पर हर समय भीड़ क्यों लगी रहती थी ?
सेठ बनारसीदास की कोठी पर हर समय भीड़ इसलिए लगी रहती थी क्योंकि वह धर्मात्मा बनने का दिखावा कर लोगों को कर्ज बाँटता तथा दिन - दीन - हीन लोगों की जमा-पूँजी धरोहर के रूप में अपने पास रखता था।

प्रश्न-3- अंधी ने बेट्टे के इलाज के कौन-कौन से तरीके अपनाए ?
अंधी ने बेटे के इलाज के लिए दवा-दारू, झाड़-फूँक, टोने-टोटके आदि तरीके अपनाए।

प्रश्न-4- अंधी ने रुपयों की थैली सेठ जी को वापस क्यों लौटा दी ?
अंधी ने रुपयों की थैली सेठ जी को वापस इसलिए लौटा दी क्योंकि वह यह रुपए अपने बेटे के लिए एकत्र कर रही थी, जो कि सेठ जी का बेटा निकला और अब भविष्य में उन्हीं के साथ रहने वाला था।

प्रश्न-5- मदद और दान में क्या अंतर है ?
मदद और दान में प्रमुख अंतर यह है कि हम कभी-कभार किसी के कहने पर उसकी मदद करते हैं और न कहने पर भी अपनी इच्छा से किसी की मदद कर देते हैं, परन्तु किसी के द्वारा याचना करने पर हम स्वेच्छा से कोई वस्तु उसे दान कर देते हैं।

प्रश्न-6- आपकी दृष्टि से असली याचक (भिखारी) कौन है ? क्यों ?
हमारी दृष्टि में असली याचक (भिखारी) वे लोग हैं, जो बेईमान, चालाक तथा धूर्त हैं, क्योंकि ऐसे लोग हमेशा दूसरों का अधिकार एवम् धन-संपत्ति छीनकर ही सुख पाते हैं और ऐसे लोगों की गिनती हमेशा याचक अर्थात् भिखारी के रूप में ही की जाती है।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

प्रश्न-1- परंतु पत्थर में जोंक न लगी - यहाँ पत्थर (किसको) किसे कहा गया है ? क्यों ?
परन्तु पत्थर में जोंक न लगी - यहाँ पत्थर सेठ बनारसीदास को कहा गया है क्योंकि एक तो सेठ ने अंधी के सारे पैसे बेईमानी से हड़प लिए और अपने मरणासन्न बेटे के इलाज के लिए अंधी ने रो-रोकर सेठ से प्रार्थना की, परन्तु उस पत्थर दिल सेठ का दिल नहीं पसीजा।

प्रश्न-2- सेठ जी को अंधी को लेने क्यों जाना पड़ा ?
सेठ जी को अंधी को लेने इसलिए जाना पड़ा क्योंकि उसका बेटा पुनः ज्वर में बुरी तरह तप रहा था और लगातार माँ-माँ की रट लगाए हुए था। डॉक्टरों ने भी जवाब दे दिया था और अपने मरते हुए बेटे की जान बचाने के लिए उसे अपने हाथ-पैर जोड़कर उस अंधी को अपने साथ लाना पड़ा।

प्रश्न-3- सेवा तो सेठ जी के नौकर भी कर रहे थे, पर अंधी के आने पर ही बच्चा स्वस्थ हुआ। क्यों ?
इस दुनिया में हर बच्चे के लिए उसकी माँ ही उसका संसार होती है जो उसे अच्छा समझती है, पालती-पोसती है और उसके हर दुख-दर्द समझती है। कभी अगर बच्चे को कोई समस्या हो तो उसे उसकी माँ से बेहतर और कोई नहीं समझ सकता। ठीक इसी प्रकार अपने ही सेठ जी के

Kumar

Date: / /
Page:

बच्चे की सेवा में तमाम नौकर लगे हो, परन्तु वह बच्चा हमेशा से ही अपनी माँ को अपने नज़दीक पाता और खुश रहता और जब सेठ जी उस अंधी को अपने बच्चे के पास ले कर आए तो वह बच्चा अपनी माँ का दुलार एवम प्रेम प्रेम पाकर धीरे-धीरे स्वस्थ होने लगा।

प्रश्न-4- सेठ जी बड़े ही धर्मात्मा थे फिर भी उन्होंने अंधी की धरोहर लौटाने क्यों मना कर दिया?

सेठ जी धर्मात्मा नहीं बल्कि धर्मात्मा बनने का दिखावा कर रहे थे। असल में वे एक चालाक और धूर्त व्यक्ति थे जो लोगों का पैसा एवम् हिस्सा हड़प लिया करते थे। इसी कारणवश अंधी के पैसों को हड़पने की खातिर सेठ ने उसकी धरोहर लौटाने से मना कर दिया।

प्रश्न-5- सेठ और अंधी के चरित्र की तीन-तीन विशेषताएँ लिखिए।

सेठ-

सेठ देशभक्त धर्मात्मा होने का दिखावा करता था। वह गरीबों का हक छीनकर उनका शोषण करता था। वह अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किसी का भी बुरा कर सकता था।

प्रश्न अंधी-

वह एक गरीब महिला थी, परन्तु नेक दिल थी। वह ममतामयी थी इसलिए अपना बच्चा न होने के बावजूद भी मोहन को प्राणों से अधिक प्रेम करती थी। वह दयालु थी इसलिए सेठ जी से अत्यन्त क्रोधित होने के बाद भी वह उनकी प्रार्थना से पिघलकर उनके साथ चल दी।

Shot on Y83 Pro
vivo dual camera

Kumar

Date: / /
Page:

प्रश्न-6- इस समय सेठ याचक था और वह दाता थी। भले ही सेठ के पास मान-सम्मान और धन बहुत अधिक था, क्योंकि वह एक धूर्त तथा लालची व्यक्ति था, जिसने अंधी की सारी जमा-पूँजी हड़प ली थी परन्तु नियति को कुछ और ही मंजूर था, अंधी का बच्चा ही सेठ का खोया हुआ मोहन था, जिसके प्राण बचाने के लिए सेठ को उसके सामने गिड़गिड़ाना पड़ा और अंततः जाते-जाते वह सेठ को याचक और स्वयं को दाता बना गई क्योंकि जो पैसे उसने मोहन के भविष्य के लिए संभाल कर रखे थे वह पैसे उसने सेठ से लिए ही नहीं।

Good

Ashish
25/04/19

2nd line - परन्तु वह अंधी के समक्ष बहुत तुच्छ था